फोनः-4103333, 2362400 फैक्सः-0141-2373513 वर्षः 77 संख्याः 12 प्रभात जयपुर, बुधवार 12 अगस्त, 2026 डाक पं.सं. जयपुर सिटी/001/2021-23 पृष्ठ 8 मूल्य 2.75 रु.

जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

Metro

Rashtradoot

epaper.rashtradoot.com

ARBiT

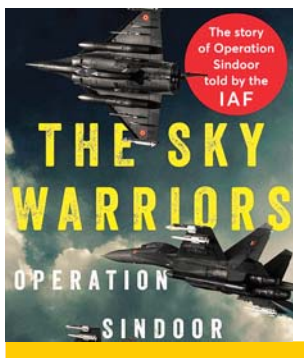

How The IAF Commandeered...

The split-second choices, the weight of command, the handling of modern state of the war waging equipment and the commitment of those who fly these war machines...

The Accidental Birth of Coca-Cola

Nehru Was Prime Minister In '46!

भाजपा ने राहुल गांधी पर दो मुंही राजनीति करने का आरोप लगाया

भाजपा का आरोप है कि जंतर-मंतर में छात्रों पर बल प्रयोग पर तो राहुल काफी मुखर हैं, पर, झारखंड में उनकी सहयोगी पार्टी की सरकार द्वारा किए गए छात्रों के दमन की वे अनदेखी कर रहे हैं

-रेणु मित्तल-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 11 अगस्त। भाजपा पेपर लीक और छात्रों के आंदोलन को लेकर कांग्रेस के खिलाफ बाजी पलटने के लिए जी तोड़ कोशिश कर रही है।

भाजपा का निशाना राहुल गांधी हैं और सवाल यह उठाया जा रहा है कि झारखंड में आंदोलनकारी छात्रों पर पुलिस द्वारा लाठीचार्ज और पानी की बौछार किए जाने के मुद्दे पर राहुल गांधी चुप क्यों हैं।

झारखंड में कांग्रेस, झारखंड मुक्ति मोर्चा (जेएमएम) के नेतृत्व वाली सरकार में गठबंधन सहयोगी है और भाजपा का निशाना मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन हैं, जिनके पास शिक्षा विभाग भी है।

ऐसी कोई खबर सामने नहीं आई है कि राहुल गांधी ने हेमंत सोरेन से बात कर उनसे कई दिनों से जारी छात्र आंदोलन को समाप्त कराने के लिए कदम उठाने को कहा हो।

छात्रों की मांग है कि पेपर लीक मामले की सीबीआई जांच की घोषणा की जाए।

- **राहुल पर दो मुंही राजनीति करने का भाजपा का आरोप अतिशयोक्तिपूर्ण हो सकता है, पर सच यही है कि झारखंड के छात्र आंदोलन पर पुलिस के दमन पर चुप रहना राहुल की विश्वसनीयता पर प्रश्न चिह्न लगाता है।**
- **भाजपा पूरी कोशिश कर रही है कि राहुल की झारखंड पर चुप्पी को मुद्दा बनाकर राहुल की युवाओं के करीब जाने की नीति को विफल कर दिया जाए।**
- **ज्ञातव्य है कि अभी तक ऐसी कोई सूचना नहीं है कि इस मुद्दे पर राहुल गांधी ने झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन से बात की है।**

हेमंत सोरेन ऐसा करने के लिए तैयार नहीं हैं।

भाजपा अपनी मुख्यधारा की "गोदी मीडिया" का इस्तेमाल कर रही है। इन मीडिया संस्थानों के प्रतिनिधियों को रांची भेजकर आंदोलन को व्यापक कवरेज दिया जा रहा है और उसे बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया जा रहा है। इसी प्रक्रिया में कांग्रेस और राहुल गांधी पर दोहरा मापदंड अपनाने का आरोप लगाया जा रहा है।

राहुल गांधी ने पेपर लीक और भाजपा के छात्र विरोधी रवैये के मुद्दे पर भाजपा के खिलाफ एक मजबूत राजनीतिक आधार तैयार किया था। कांग्रेस नेता ने जो बढ़त हासिल की थी, उसे भाजपा अपने आक्रामक अभियान के जरिए खत्म करने की कोशिश कर रही है।

इसकी झलक संसद में भी देखने को मिली, जहां एनडीए और विपक्षी गठबंधन के सांसद एक-दूसरे के खिलाफ नारे लगा रहे थे और वर्दीधारी सुरक्षाकर्मियों की एक बड़ी टुकड़ी दोनों पक्षों के बीच दीवार की तरह खड़ी थी, ताकि यदि कोई शारीरिक टकराव की स्थिति बने तो उसे रोका जा सके।

राहुल गांधी के लिए बेहतर होता कि वह हेमंत सोरेन से संपर्क करते और इस मुद्दे का समाधान निकालने की कोशिश करते, लेकिन ऐसा लगता है कि उन्होंने ऐसा नहीं किया है।

रांची में आंदोलन जितना लंबा खिंच रहा है, यह स्थिति राहुल गांधी के लिए उतनी ही अधिक नुकसानदेह होती जा रही है।

इस बीच, गृह मंत्री अमित शाह एक बार फिर सदन में नहीं आए। मानसून सत्र के समाप्त होने में अब केवल दो दिन बचे हैं और ऐसे में यह लगभग असंभव लग रहा है कि भाजपा जिन महत्वपूर्ण विधेयकों को पारित कराना चाहती है, उनमें से कोई भी पारित हो पाएगा।

15 अगस्त से ग्रामीण स्कूलों के लिए मुहिम छेड़ेगी सीजेपी

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 11 अगस्त। कॉकरोच जनता पार्टी (सीजेपी) के संस्थापक अभिजीत दीपके ने मंगलवार को गांवों में सरकारी स्कूलों की स्थिति सुधारने के लिए एक राष्ट्रव्यापी अभियान की घोषणा की। उन्होंने अभिभावकों से स्कूलों में बुनियादी सुविधाओं का सामाजिक ऑडिट करने और सरपंचों से इन संस्थानों की स्थिति सुधारने की जिम्मेदारी उठाने का आ ान किया।

- **सीजेपी के संस्थापक अभिजीत दीपके ने कहा कि इसकी शुरुआत वे महाराष्ट्र में अपने गाँव हिंगोली से करेंगे।**

यह अभियान 15 अगस्त से शुरू किया जाएगा। सीजेपी ने नागरिकों, अभिभावकों और गांव के नेताओं से मिलकर काम करने और ग्रामीण शिक्षा के बुनियादी ढांचे की कथित उपेक्षा को दूर करने का आ ान किया है।

एक वीडियो संदेश में दीपके ने कहा कि वे अपने गांव हिंगोली, महाराष्ट्र से इस पहल की शुरुआत करेंगे और वहां के सरकारी स्कूलों की स्थिति सुधारने के अनुरोध के साथ ग्राम प्रधान से संपर्क करेंगे।

दीपके ने कहा, आने वाले 15 अगस्त को हमारा 80वां स्वतंत्रता दिवस है। लेकिन पिछले 80 वर्षों में

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

आतंकी धमकी के बाद कश्मीरी पंडितों को छुट्टी पर भेजा

कश्मीर में सेवारत सैकड़ों कश्मीरी पंडित कर्मियों को 25 अगस्त तक प्रशासनिक अवकाश दिया गया है

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 11 अगस्त। पाकिस्तान स्थित आतंकी संगठन लश्कर-ए-तैयबा (एलइटी) से जुड़े एक समूह द्वारा कथित तौर पर जारी धमकी भरे पत्र के बाद सैकड़ों कश्मीरी पंडित कर्मचारियों को 25 अगस्त तक प्रशासनिक अवकाश पर भेज दिया गया है।

हाल ही में, एक कथित धमकी पत्र प्रसारित होने के बाद कश्मीरी पंडित कर्मचारियों में भय व्याप्त हो गया। इस पत्र में कुछ कर्मचारियों के नाम और उनके संपर्क विवरण भी दिए गए थे।

आधिकारिक सूत्रों के अनुसार, प्रधानमंत्री के विशेष रोजगार पैकेज के तहत नियुक्त सभी कर्मचारियों को सुरक्षित स्थानों पर चले जाने की सलाह दी गई है। सूत्रों ने बताया कि धमकी पत्र में जिन कर्मचारियों के नाम शामिल थे, उन सभी को सुरक्षित रूप से जम्मू स्थानांतरित कर दिया गया है।

- **लश्कर-ए-तैयबा के धमकी वाले पत्र में कुछ कर्मचारियों का नाम भी है। उनका ट्रांसफर जम्मू कर दिया गया है, जो कर्मचारी कश्मीर में ही हैं, उन्हें घर पर ही रहने की हिदायत दी गई है।**
- **ज्ञातव्य है कि प्रधानमंत्री के स्पेशल रोजगार पैकेज के तहत 6,000 कश्मारी पंडितों को सरकारी नौकरी दी गई थी ताकि वे कश्मीर लौट सकें।**

कश्मीरी पंडित कर्मचारी अमित कौल ने कहा, धमकियों के बाद पुलिस ने हमें काम पर नहीं जाने की सलाह दी है। जो लोग अभी भी घाटी में रह रहे हैं, उनसे भी कहा गया है कि वे अपने घरों से बाहर न निकलें।

पुलिस ने कहा कि वह धमकियों की जांच कर रही है और कर्मचारियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक सुरक्षा उपाय किए जा रहे हैं।

एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने कहा, यह एहतियाती कदम है। हम इन धमकियों की जांच कर रहे हैं और सभी की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक कदम उठा रहे हैं।

लगभग 6,000 कश्मीरी पंडितों को 2010 में शुरू किए गए प्रधानमंत्री के विशेष रोजगार पैकेज के तहत सरकारी नौकरियां दी गई थीं। इस पैकेज का उद्देश्य 1990 में अलगाववादी आंदोलन शुरू होने के बाद अपने पैतृक स्थान से विस्थापित हुए कश्मीरी पंडितों की वापसी और पुनर्वास को सुगम बनाना था।

शाह के संसद में बयान से भाजपा छात्र आंदोलन की इतिश्री चाहती है?

पर, राजनीति का कायदा है, अगर किसी दल का पलड़ा भारी हो तो वह उस लाभ से वंचित नहीं होना चाहता, तो क्या इसीलिए राहुल यह इतिश्री नहीं चाहते

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 11 अगस्त। 20 जुलाई को जंतर-मंतर पर प्रदर्शनकारियों के खिलाफ पुलिस की कथित बर्बरता पर केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह से संसद में बयान देने की इंडिया ब्लॉक की मांग का रुख पलटने की स्पष्ट कोशिश के तहत, सत्तारूढ़ एनडीए के सांसदों ने आज संसद परिसर के भीतर मार्च निकाला और झारखंड में नौकरी के इच्छुक अभ्यर्थियों के खिलाफ हुई बर्बर पुलिस कार्रवाई को लेकर नारे लगाए।

जहां भाजपा के नेतृत्व वाले एनडीए के सांसद संसद के मकर द्वार के बाहर एकत्र हुए और झारखंड में छात्रों के खिलाफ हुई हिंसा का विरोध किया, वहीं विपक्ष ने अयोध्या में राम मंदिर के लिए मिले चंदे की कथित चोरी के खिलाफ प्रदर्शन किया और दिल्ली में 20 जुलाई को प्रदर्शनकारियों पर पुलिस की कार्रवाई को लेकर केन्द्रीय गृह मंत्री से बयान देने की मांग की।

- **राहुल गांधी ने यह भी कहा कि देश को सामान्य विषयों पर अमित शाह के बयान में दिलचस्पी नहीं है। देश जानना चाहता है कि क्या छात्रों पर पैलैट गन चलाने का आदेश उन्होंने दिया था।**

एनडीए सांसदों ने आरोप लगाया कि कांग्रेस नेता राहुल गांधी देशभर में हो रहे छात्रों के विरोध प्रदर्शनों पर बहस से "भाग रहे हैं", जबकि इंडिया ब्लॉक के सांसदों ने 20 जुलाई को पेपर लीक के विरोध में हुए छात्र प्रदर्शनों के दौरान कथित पुलिस ज्यादती को लेकर केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह की जवाबदेही तय करने की मांग की।

'मकर द्वार' पर विरोध-प्रदर्शन के दौरान, दोनों विरोधी पक्षों के सांसदों ने अपने-अपने मांगों वाले पोस्टर और तख्तियां हाथों में लेकर एक-दूसरे के खिलाफ नारे लगाए। लेकिन सुरक्षा कर्मियों ने दोनों पक्षों के बीच घेरा बनाकर उन्हें अलग रखा। एनडीए सांसद संसद पुस्तकालय से सदन के मुख्य

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

टोक्यो से नेताजी की अस्थियां भारत लायें

नई दिल्ली, 11 अगस्त। सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार को नेताजी सुभाष चंद्र बोस की बेटी की उस याचिका पर केन्द्र सरकार से जवाब मांगा, जिसमें टोक्यो के रेंकोजी मंदिर से उनकी अस्थियों को लाने का निर्देश देने की मांग की गई है।

चीफ जस्टिस सूर्यकांत, जस्टिस जॉयमाल्या बागची और जस्टिस वी मोहना की पीठ ने बोस की बेटी अनीता बी फाफ की ओर से दाखिल याचिका पर सुनवाई के दौरान केन्द्र को नोटिस जारी कर जवाब मांगा।

- **नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की बेटी ने सुप्रीम कोर्ट में याचिका लगाई।**

याचिकाकर्ता की ओर से पेश हुए वरिष्ठ वकील अभिषेक सिंघवी ने कहा कि उन्होंने लगातार और सार्वजनिक रूप से मांग की है कि उनके पिता के पार्थिव अवशेषों को सम्मानपूर्वक अंतिम संस्कार के लिए वापस लाया जाए।

ईरान की धमकी से अमेरिका बेहद भयभीत है, ट्रंप की सुरक्षा के बारे में

इसी डर के कारण तुर्की से वापसी के समय ट्रंप को गुप्त रूप से केटरिंग वैन में छुपाकर एक छोटे हवाई जहाज से वॉशिंगटन ले जाया गया

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 11 अगस्त। यह जॉन ली कार की जासूसी थ्रिलर जैसी कहानी लगती है। लेकिन तुर्की में नाटो की बैठक के बाद घर लौटते समय डॉनल्ड ट्रंप का विमान बदलने का जो तरीका अपनाया गया, वह ईरान के साथ तनाव के बाद अमेरिकी प्रशासन में फैले डर को असलियत में दिखाता है।

ईरानियों ने खुले तौर पर कहा था कि डॉनल्ड ट्रंप उनके मुख्य निशाने पर हैं और ईरानी गुप्तचर सेवा के लोग उन्हें खत्म कर देंगे। इसलिए अमेरिकी खुफिया तंत्र ने डॉनल्ड ट्रंप की वापसी की यात्रा को किसी जासूसी फिल्म थ्रिलर की तरह प्लान किया।

इस विस्तृत गुप्त यात्रा की कहानी मशहूर अखबार वॉशिंगटन पोस्ट ने सबसे पहले प्रकाशित की और बाद में दूसरे समाचार संगठनों ने भी इसकी पुष्टि की। याद किया जा सकता है कि राष्ट्रपति रिचर्ड निक्सन के कार्यकाल में वॉटरगेट कांड का खुलासा भी वॉशिंगटन पोस्ट ने ही किया था, जिसके बाद अंततः उन्हें (निक्सन) समय से पहले पद छोड़ना पड़ा था।

- **इस गुप्त यात्रा की पूरी कहानी वॉशिंगटन पोस्ट में छपी है कि कैसे ट्रंप को केटरिंग वैन में छुपाया गया और अधिकृत विमान की बजाय दूसरे विमान से ले जाया गया। हालांकि, पहले उन्हें अमेरिकी राष्ट्रपति के पारंपरिक विमान, विशाल बोइंग में चढ़ते हुए दिखाया गया।**
- **इसका उद्देश्य था कि अगर ईरान अपनी धमकी को अमल में लाते हुए ट्रंप को निशाना बनाता तो वह बोइंग पर ही हमला करता, जिसमें तमाम मीडिया कर्मियों ने सफर किया।**

अमेरिकी सीक्रेट सर्विस अभियान के तहत, ट्रंप को एक केटरिंग वैन में छिपाया गया और उनके आम तौर पर इस्तेमाल होने वाले विमान "एयर फोर्स वन" से हटाकर दूसरे विमान में ले जाया गया। इस गुप्त अभियान से पहले, राष्ट्रपति को उनके सामान्य अंदाज़ में विशाल बोइंग 747 विमान में सवार होते हुए दिखाया गया, जो अमेरिकी राष्ट्रपति को ले जाने वाला पारंपरिक विमान है।

जब राष्ट्रपति के विमान में सवार होने का यह वीडियो नाटक खत्म हो गया तो अमेरिका के राष्ट्रपति को जल्दी से विमान से उतारकर एक केटरिंग वैन में बिठाया गया, जो तुर्की के अंकारा हवाई अड्डे पर आधिकारिक विमान के पास ही खड़ी थी। बताया जाता है कि राष्ट्रपति को उसमें छिपाने के लिए केटरिंग ट्रक को विमान के नीचे बने कार्गो हैच (सामान लादने वाले दरवाज़े) के पास लाया गया था।

इसके बाद अमेरिकी राष्ट्रपति को जल्दी से विमान से उतारा गया और एक छोटे सी-32 परिवहन विमान तक ले जाया गया। यह विमान राष्ट्रपति को के. मिलिट्री एयरबेस ले गया। ट्रंप के विमान से उतरने के कुछ ही समय बाद असली "एयर फोर्स वन" को चालू किया गया और कुछ देर बाद वह ब्रिटेन के एयरबेस के लिए रवाना हो गया।

इस बीच, राष्ट्रपति के साथ मौजूद बाकी लोग, जिनमें प्रेस पूल के मीडिया कर्मी भी शामिल थे, राष्ट्रपति के विमान में ही राष्ट्रपति के बिना अपनी तय यात्रा पर आगे बढ़ गए। मीडिया कर्मियों को पता भी नहीं चला कि वे दुश्मन के हत्यारों (अगर कोई होते) के लिए

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)